इकाई 12 महिलाओं के संबंध में लेखन

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 महिला लेखन का परिप्रेक्ष्य

12.3 महिला लेखन के प्रचलित दृष्टिकोण

- 12.3.1 स्त्रीवादी दृष्टिकोण
- 12.3.2 पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण
- 12.3.3 मार्क्सवादी दृष्टिकोण

12.4 विषय का चयन

- 12.4.1 रुचि और विशेषज्ञता
- 12.4.2 लेखन का उद्देश्य और प्रासंगिकता
- 12.4.3 पाठक वर्ग
- 12.4.4 प्रकाशन की प्रकृति

12.5 सामग्री का संकलन

- 12.5.1 विषय पर शोध
- 12.5.2 तथ्यों का संकलन
- 12.5.3 साक्षात्कार
- 12.5.4 फोटो और अन्य सामग्री

12.6 सामग्री का संयोजन और संपादन

12.7 फीचर का लेखन

- 12.7.1 आरंभ
- 12.7.2 मध्य
- 12.7.3 अंत
- 12.7.4 शीर्षक

12.8 भाषा–शैली

12.9 सारांश

12.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

यह इस पाठ्यक्रम के तीसरे खंड की पहली इकाई है। इस इकाई में आप महिला लेखन और महिलाओं के सम्बन्ध में लेखन के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षों का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- महिला लेखन के परिप्रेक्ष्य और विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित हो सकेंगी/सकेंगे;
- महिलाओं के संबंध में लेखन के लिए सही विषय का चयन कर सकेंगी/सकेंगे;
- लेखन के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन कर सकेंगी/सकेंगे;
- संकलित सामग्री का संपादन और संयोजन कर सकेंगी/सकेंगे;

- महिलाओं से संबंधित फीचर लिखने की कुशलता का विकास कर सकेंगी/सकेंगे, और
- फीचर का उचित शीर्षक दे सकेंगी/सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

समाचार–पत्र और फीचर लेखन से संबंधित व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम की इस इकाई में आप महिला लेखन के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षों की जानकारी प्राप्त करेंगे। महिला लेखन के विषय का चयन कैसे किया जाए, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। महिलाओं के विषय में लिखते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि वहां कोई विषय ऐसा नहीं हो, जिस पर न लिखा जा सके। विषय का चयन करते हुए लेखक की रुचि, विशेषज्ञता का क्षेत्र, लेखन का उद्देश्य, पाठक–वर्ग और पत्र–पत्रिका का स्वरूप–इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। इकाई में इन सभी पक्षों की विस्तार से चर्चा की गई है। विषय का चयन करने के बाद उससे संबंधित सामग्री का संकलन आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक शोध, तथ्यों का संकलन, संबंधित लोगों से साक्षात्कार, फोटो आदि एकत्र करना चाहिए। बिना पूर्ण तैयारी के फीचर लिखना उचित नहीं है। ऐसा फीचर प्रभावशाली नहीं हो सकता। फीचर लिखना आरंभ करने से पूर्व उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए और यह तय कर लेना चाहिए कि फीचर के आरंभ मध्य और अंत में क्या होगा और ये अंश कैसे लिखे जाएंगे। फीचर लेखन के इन सभी व्यावहारिक पक्षों का विस्तार से विवेचन किया गया है और उदाहरणों के द्वारा प्रत्येक बात को स्पष्टता से समझाया गया है। इकाई में दिए गए अभ्यासों द्वारा आप महिला लेखन में अपनी कुशलता का विकास कर सकेंगे।

12.2 महिला लेखन का परिप्रेक्ष्य

महिलाओं पर लिखते समय सबसे पहली चीज यह है कि उनके बारे में बने–बनाए मिथकों को तोड़ा जाए। उनके जीवन पर रहस्य का जो पर्दा पड़ा हुआ है उसे हटाया जाए। उनकी पहचान और सम्प्रेषण के नए–पुराने रूपों को जाना जाए। भारतीय स्त्री की आधुनिक छवि और आधुनिक चेतना के निर्माण में महात्मा गांधी के नेतृत्व में चले स्वाधीनता संग्राम, महिला आन्दोलन, विश्वव्यापी महिला जागरण की लहर और समाजवादी विचारों की केन्द्रीय भूमिका रही है। महिला आन्दोलन के विकास पर स्त्री जागरूकता का सारा दारोमदार टिका है। यह संभव ही नहीं है कि महिलाओं के हितों की रक्षा के संघर्ष के बिना महिला जागरण पैदा हो। महिला आन्दोलन वास्तविक अर्थों में स्त्री जागरण की धुरी है। महिला आन्दोलन के विकास के लिए जनतंत्र का चौतरफा विकास करना जरूरी है। पितृसत्तात्मक मूल्यों और संरचनाओं के प्रति जागृति पैदा की जानी चाहिए। स्त्री अस्मिता के निर्माण के लिए पहली शर्त है कि स्त्री–पुरुष के बीच समानता की धारणा को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किया जाए। उन तमाम सवालों, स्थितियों और संरचनाओं को चुनौती दी जाए जो स्त्री–पुरुष के बीच असमानता की खाई पैदा करते हैं।

परंपरागत नजरिए से स्त्री को सौन्दर्य, प्रकृति, पवित्रता, अच्छाई, अनुकरणकर्ता के रूप में महिमामंडित किया गया है। इसके अलावा स्त्री के प्रति हमारे समाज में अनेक निषेध प्रचलन में हैं। स्त्री के लिए प्रचारित निषेधों के कारण उसका सामाजिक दायरा संकुचित हुआ है। स्त्री को पुरुष संदर्भ के जरिए परिभाषित करने की परंपरा चल

निकली, जिसके कारण स्त्री के प्रति परंपरागत और रूढ़िवादी नजरिए का प्रयोग किया जाता रहा है। स्त्री की आधुनिक पहचान के लिए जरूरी है कि उसे स्त्री–संदर्भ में देखा जाए उसके जीवन के अन्तर्विरोधों की स्त्री–संदर्भ में मीमांसा की जाए। उसके पराश्रित भाव को चुनौती दी जाए। मां, बहन, पत्नी से पहले वह स्त्री है, इंसान है, व्यक्ति है। इसके लिए जरूरी है कि स्त्री की अस्मिता को तयशुदा स्त्री–पहचान के रूपों से बाहर लाकर चित्रित किया जाए। यह भी ध्यान रहे कि स्त्री का संघर्ष बहुआयामी होता है। उसे कभी एकायामी नजरिए से नहीं देखना चाहिए। सामान्य तौर पर जिन चीजों को छोटा मानकर अमूमन उपेक्षा की जाती है, स्त्री के लिए वे चीजें महत्वपूर्ण होती हैं। स्त्री अस्मिता का संघर्ष छोटे–छोटे मसलों में ही सबसे पहले अभिव्यक्ति पाता है। उसकी जिन्दगी की छोटी–छोटी ख्वाहिशें, छोटी–छोटी चीजों की इच्छाएं बड़े परिवर्तनों को जन्म दे सकती हैं।

स्त्री की पहचान को स्थापित करने के संघर्ष का पहला चरण वह है जिसमें स्त्री अपने को अभिव्यक्त करे। दूसरा चरण वह है जिसमें वह लिखे। ये दोनों चरण क्रमशः और एक साथ चल सकते हैं। इस क्रम में स्त्री अपना सामाजिक स्थान बनाती है, समाज में अपनी जगह बनाती है, निजी को सामाजिक करती है। इसका अर्थ यह है कि स्त्री संबंधी विषयों पर लिखते समय कोशिश होनी चाहिए कि स्त्री ज्यादा से ज्यादा अपने को व्यक्त करे। पुरुष जिन सवालों को महत्वपूर्ण मानता है, जरूरी नहीं है कि स्त्रियों के लिए भी वे उतने ही महत्वपूर्ण हों।

स्त्री पर फीचर लिखते समय यथार्थ के एकायामी चित्रण की बजाय समग्र स्त्री रूप पर जोर दिया जाना चाहिए। स्त्री के सार्वभौम रूप की बजाय विशिष्ट रूप पर जोर दिया जाना चाहिए। स्त्रियों में अनेक सामाजिक वर्ग हैं। इनमें स्वभावगत, मूल्यगत और संस्कारगत अंतर होता है। इस भिन्नता को ओझल नहीं करना चाहिए। स्त्री को मूलतः लैंगिक के रूप में देखना चाहिए। लिंग या लैंगिकता का अंग्रेजी में पर्यायवाची शब्द है। जेंडर, इसके पर्यायवाची के रूप में 'सेक्स' (यौन), 'सेक्सुअल डिफरेंस' (लैंगिक या यौन भिन्नता) पदबंधों का इस्तेमाल किया जाता है। इतिहासकारों में लैंगिक अध्ययन की परंपरा बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में शुरू हुई। इसके पहले ऐसे अध्ययन की परंपरा का जिक्र नहीं मिलता। साहित्य में लैंगिक अध्ययन पहले शुरू हुआ, समाजविज्ञान में इसका प्रयोग बाद में हुआ। स्त्री के संदर्भ में लिंग पदबंध का ज्यों ही इस्तेमाल करते हैं इससे कई अर्थ व्यंजित होते हैं। पहला यह कि लिंग एक नहीं दो हैं। उनमें भी फर्क होता है। दूसरा अर्थ यह व्यंजित होता है लिंग सामाजिक संबंधों को व्यक्त करता है। तीसरा अर्थ व्यक्त होता है कि इसमें उभयलिंगी अन्तर्विरोध निहित है।

प्रसिद्ध नारीवादी लुइस इरीगरी ने लिखा है 'नई स्त्री न तो बंद है और न खुली है। वह अनिश्चित है, अधूरी है या यूं कहें कि कभी पूरी थी ही नहीं। उसकी अपनी कोई इकाई भी नहीं थी। उसकी इमेज बनाने वाली अनेक चीजें हैं जिनमें उसका पूरा नाम, उसका अजनबीपन आदि सहज पहचान के आधार हैं। अधूरे रूप के कारण ही वह कभी भी कुछ भी बन जाती है। उसे किसी भी रूप के जरिए पूरा नहीं किया जा सकता। बल्कि वह तो ऐसी चीज का विस्तार है जिसे किसी ने देखा ही नहीं है और न वह कभी वैसी होगी। 'इरीगैरय' ने यह भी लिखा कि 'जब वह किसी जगह हस्तक्षेप करती है तो उसे लिपिबद्ध करना बेहद कठिन होता है। उसने कभी स्त्री की तरह देखा नहीं, स्त्री के प्रति अन्यमनस्क रही, अतः उसमें पुनः स्त्री की संवेदनाएं पैदा करना, निर्णायक हस्तक्षेप के बिना संभव ही नहीं है।'

12.3 महिला लेखन के प्रचलित दृष्टिकोण

स्त्रियों पर लिखते समय उनके बारे में प्रचलित विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में जान लेना उचित होगा। इनमें नारीवादी दृष्टिकोण, पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण, मार्क्सवादी दृष्टिकोण प्रमुख हैं।

12.3.1 स्त्रीवादी दृष्टिकोण

फीचर लेखन में नारीवादी नजरिए से देखने का अर्थ है स्त्री–पुरुष के बीच समानता की बात करना, स्त्री को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के समान मानना। लिंगभेद के सभी रूपों का विरोध करना। नारीवादी नजरिए के प्रतिपादकों में अनेक किस्म के चिंतकों के नाम लिए जाते हैं। नारीवाद की धारणाओं के निर्माण में सारी दुनिया में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से प्रयास हो रहे हैं। नारीवाद की विभिन्न अवधारणाओं का महिला आन्दोलन, मजदूर आन्दोलन और महिला जागृति के प्रयासों के साथ गहरा संबंध है। महिला आन्दोलन ने सबसे पहले स्त्री शोषण, उत्पीड़न और विषमता के सवालों को केन्द्रीय महत्व दिया।

इस प्रसंग में जॉन स्टुअर्ट मिल की किताब 'दि सब्जेक्शन ऑफ वीमेन' (1869) का प्रमुख स्थान है। सन् 2002 में यह पुस्तक हिन्दी में 'स्त्रियों की पराधीनता' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। मिल ने स्त्री की दशा को गुलामों की अवस्था से भी बदतर पाया। स्त्री पर पुरुष आधिपत्य के पक्ष में आम धारणा यह है कि यह आधिपत्य बल के नियम से नहीं, बल्कि स्वेच्छा से स्वीकारा जाता है। मिल ने इस धारणा का खंडन किया है। मिल का मानना है कि स्त्रियों में जब से शिक्षा का प्रचार हुआ है और वे लेखन के क्षेत्र में आई हैं तब से उन्होंने बड़ी तादाद में अपनी वर्तमान अवस्था के खिलाफ विरोध दर्ज किया है। ज्ञान के प्रसार के साथ ही महिलाओं में 'इच्छा' जैसी किसी चीज ने जन्म लिया और उसकी रक्षा करने और उसे बचाने के लिए महिलाएं आगे आईं। इसके पहले तो स्त्री की 'इच्छा' और 'मन' जैसी किसी चीज का अस्तित्व ही नहीं था। वह सिर्फ 'देह' थी।

स्त्रियों के सामाजिक शोषण की प्रकृति एकदम भिन्न रही है। मिल ने लिखा है कि 'सामाजिक व प्राकृतिक–सभी कारण मिलकर यह असंभव कर देते हैं कि महिलाएं संगठित तौर पर पुरुषों की सत्ता का विरोध कर सके। वे अन्य पराधीन वर्गों से भिन्न स्थिति में हैं कि उनके मालिक उनसे वास्तविक सेवा के अतिरिक्त कुछ और भी चाहते हैं। पुरुष केवल महिलाओं की पूरी–पूरी आज्ञाकारिता ही नहीं चाहते, वे उनकी भावनाएं भी चाहते हैं। सबसे क्रूर और निर्दयी पुरुष को छोड़कर सभी पुरुष अपनी निकटतम संबंधी महिला में एक जबरन बनाए गए दास की इच्छा रखते हैं सिर्फ एक दास नहीं, बल्कि अपना प्रिय, अपना चहेता व्यक्ति चाहते हैं। अतः उन्होंने महिलाओं के मस्तिष्क को दास बनाने के लिए हर चीज का इस्तेमाल किया है। अन्य दासों के मालिक आज्ञाकारिता बनाए रखने के लिए भय का प्रयोग करते हैं–उनका खुद का भय या फिर धार्मिक भय। स्त्रियों के मालिक साधारण आज्ञाकारिता से कुछ अधिक चाहते थे और उन्होंने शिक्षा के पूरे बल का इस उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया।"

महिलाओं पर फीचर लिखते समय बुनियादी तौर पर यह ध्यान रखना चाहिए कि उसमें स्त्रियों के विचार व्यक्त हों। स्त्रियों के बारे में सारी दुनिया में व्यापक चर्चा होने के बावजूद आज भी हम उनके बारे में बहुत कम जानते हैं। नारीवादी नजरिए से स्त्री

को चित्रित करने का अर्थ है कि उनके सवालों को पुरुष संदर्भ में रखकर न देखा जाए। स्त्री के मन, तन, परिवेश को स्त्री–संदर्भ में रूपायित किया जाए। इस तरह के फीचर लेखन में स्त्री और पुरुष का आसपास फैले हुए आक्रामक परिवेश के साथ अनुकूलन के लिए तैयार करने की प्रक्रिया से बचा जा सकता है। यह तभी संभव है जब उसे लैंगिक दृष्टि से देखा जाए। इसी रूप में उसके स्वायत्त विकास, स्वतंत्र परिवेश के निर्माण की कोशिश की जाए। आमतौर पर महिला के लिए फीचर लेखन के तहत जिस तरह की सामग्री पत्र–पत्रिकाओं में निकलती है लगभग उन सबमें स्त्री को अनुकूलित करने का प्रयास दिखाई देता है। ज्यादातर लोकप्रिय पत्रिकाएं यही कर रही हैं। सीमोन द बोउआर ने अपनी पुस्तक 'स्त्री उपेक्षिता' में लिखा है, 'अपने हृदय की भावनाओं को, अपने को व्यक्त करने के लिए स्त्री के पास मुश्किल से ही कोई साधन होता है। अपनी मानसिक अवस्था के अनुसार ही वह अपनी भावनाओं को भिन्न–भिन्न रूपों में देखती है। चूंकि स्त्री मौन समर्पण करती है, इसलिए उसका एक निष्कर्ष उतना ही सच्चा होता है जितना कि दूसरा। बोउआर ने यह भी लिखा कि 'स्त्री का शरीर प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं और न केवल स्त्री का पत्नी और माता के रूप में कार्य करना ही स्त्री होने का सही परिचय है। काम–क्रिया और मातृत्व धारण करने के नाते स्त्री अपने को एक स्वतंत्र व्यक्ति कह सकती है परंतु सच्चे रूप में स्त्री होने के लिए उसे अन्य रूप में मानना ही पड़ेगा। आज के पुरुष स्त्री के प्रति दोहरा दृष्टिकोण रखते हैं। वे स्त्री को अपने बराबर के साथी के रूप में देखना चाहते है और साथ ही उसे गौण भी मानते हैं। इन दोनों विचारों में एकरूपता नहीं है। स्त्री इन दोनों विचारों के बीच पिसती है।' (सीमोन द बोउआर, स्त्री उपेक्षिता, प्रभा खेतान (अनुवादक), हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली, दूसरा संस्करण, 1992, पृ. 119)

12.3.2 पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण

फीचर लेखन में पितृसत्तात्मक नजरिए से बचा जाना चाहिए। सन् 1884 में प्रकाशित फ्रेडरिक एंगेल्स की कृति 'परिवार, राज्य और व्यक्तिगत संपत्ति' में पहली बार सुसंगत तरीके से पितृसत्ता की आलोचना सामने आई। एंगेल्स ने लिखा कि 'मातृसत्ता का विनाश नारी जाति की विश्व ऐतिहासिक महत्व की पराजय थी। जब घर के अंदर भी पुरुष ने अपना आधिपत्य जमा लिया, नारी पदच्युत कर दी गई। वह जकड़ दी गई। वह पुरुष की वासना की दासी, संतान उत्पन्न करने का एक यंत्र बनकर रह गई। बाद में धीरे–धीरे तरह–तरह के आवरणों से ढककर, सजाकर और आंशिक रूप में थोड़ी नरम शक्ल देकर उसे पेश किया जाने लगा, पर वह कमी दूर नहीं हुई। एंगेल्स ने यह भी लिखा, 'पितृसत्ता का सबसे अधिक एवं पहला प्रभाव परिवार में पड़ा। एकनिष्ठ परिवार का उदय हुआ। यह एकनिष्ठ परिवार असमान–संबंध बनाए रखता है। लिंगभेद बनाए रखता है। यह केवल नारी के लिए एकनिष्ठ है, पुरुष के लिए नहीं और आज तक उसका यही स्वरूप चला आया है। एंगेल्स ने पितृसत्ता के उदय को व्यक्तिगत संपत्ति के उदय से भी जोड़ा। कमला भसीन ने 'ह्वाट इज पैट्रिआर्चीय' (1994) कृति में लिखा कि पितृसत्ता का अर्थ है –पिता का शासन अथवा पुरुषों का शासन। इसमें परिवार के सभी सदस्य पुरुष के मातहत होते हैं। खासकर औरत को मातहत जीवन जीना होता है। पितृसत्तात्मक समाज का अर्थ है पुंसवादी समाज, पुरुष वर्चस्व प्रधान समाज। जीवन की प्रत्येक घटना, विचार, संस्कार, मूल्य, रवैये आदि को पुंसवादी नजरिए से देखने का अर्थ है पितृसत्तात्मक नजरिए से दुनिया को देखना।' केट मिलेट ने 'सेक्सुअल पॉलिटिक्स' (1970) में लिखा कि पितृसत्तात्मक दृष्टि से स्त्री का अर्थ है– पैसिव (ठंडी) या निष्क्रिय। यही आदर्श स्त्री है। जबकि सक्रिय (ऐक्टिव)

पुरुष को नॉर्मल माना जाता है। पुरुष में आक्रामकता, जिज्ञासा, महत्वाकांक्षा, जिम्मेदारी का भाव, मौलिकता, प्रतिस्पर्धी भाव, दृढ़ निश्चय एवं सुनियोजन का गुण होता है जबकि स्त्री आकर्षक, आज्ञाकारी, सहानुभूतिपरक, स्वीकृति के लिए प्रतिबद्ध, हंसमुख, विनम्र और मिलनसार होती है।' ए. रीच ने 'ऑफ वूमेन बार्न : मदरहुड ऐज एक्सपीरिएंस ऐंड इंस्टीट्यूशन' (1976) में लिखा कि पितृसत्ता पिता की सत्ता है। स्त्रियों के सामाजिक वैचारिक, राजनीतिक व्यवस्था में अधिकारों को पितृसत्ता के अनुसार तय किया जाता है। स्त्रियां कहां हिस्सा लें और कहां न लें और कैसे स्त्री सब जगह पुरुष की मातहत होकर रहे, यह पितृसत्ता की चिंता है। पितृसत्ता की व्याख्या करते हुए एस. फायरस्टोन ने लिखा कि पुनरुत्पादन के कारण औरत शोषित है। अब तक औरत की पुनरुत्पादन क्षमता का नियंत्रण पुरुष करता रहा है।

12.3.3 मार्क्सवादी दृष्टिकोण

मार्क्सवादी स्त्री विचारक मानती हैं कि स्त्री की पहचान के दो रूप हैं : लिंग और वर्ग। स्त्री में एक ही साथ इन दोनों रूपों को देखा जाना चाहिए। नारीवादी विचारकों से इनका बुनियादी फर्क यह है कि वे स्त्री को सिर्फ लिंग के रूप में या सिर्फ बायोलॉजिकल रूप में नहीं देखतीं। स्त्री के मार्क्सवादी नजरिए के निर्माण में मिशेल बरेट का प्रमुख अवदान है। मिशेल बरेट की धारणा है कि 'लिंग' का निर्माण करते समय पुरुष की यह कोशिश होती है कि वह लैंगिकता को नियंत्रित करे। लैंगिक सामाजिक विभाजन वस्तुतः श्रम विभाजन का ही एक रूप है। यह वर्गीकरण पुरुष के श्रेष्ठत्व और नियंत्रण को संभव बनाता है। मार्क्सवादी नारीवादी चिंतक स्त्री स्वायत्तता की धारणा को अस्वीकार करते हैं। वे सापेक्ष स्वायत्तता की धारणा को भी अस्वीकार करते हैं। अवागार्द चिंतक विचारधारा की भौतिकता पर जोर देते रहे हैं। मिशेल बरेट ने सवाल किया है कि ये लोग किससे स्वायत्तता चाहते हैं? बरेट ने लिखा 'विचारधारा की भौतिकता की धारणा आकर्षक और प्रभावशाली जरूर है, पर ये लोग विचारधारा को पूर्णतः स्वायत्त मानते हैं। ये लोग उत्पादन और पुनरूत्पादन का जीवन के साथ संबंध देख ही नहीं पाते। विचारधारा पर इस तरह बल देते हैं कि विचारधारा में सब कुछ भौतिक नजर आए। ये लोग विचारधारा को इतना वृहद रूप दे देते हैं कि उसमें कोई अर्थ बच ही नहीं जाता। कोई भी ऐसा उपकरण नहीं होता जिससे किसी भी चीज के बीच फर्क कर सकें। जब अर्थ भी भौतिक हो जाए तो भौतिकवाद का पदबंध स्वभावतः अपनी अर्थवत्ता खो देगा, अर्थहीन हो जाएगा।

मिशेल बरेट ने 'वूमेन्स ऑपरेशन टुडेः प्राब्लम्स इन मार्क्सिस्ट फेमिनिस्ट एनालिसिस' (1980) में लिखा कि स्त्री का उत्पीड़न कई तरह का होता है। उसे सिर्फ आर्थिक शोषण के संदर्भ में ही व्याख्यायित नहीं कर सकते। लैंगिक संबंधों को पूंजीवादी व्यवस्था ने असमान बना दिया है, उन पर हमला किया। अतः पूंजीवाद को खत्म किए बगैर लिंगभेद की समाप्ति संभव नहीं है। स्त्रियों का शोषण जरूरी नहीं है कि पूंजीवादी संबंधों के कारण ही हो, यह भी जरूरी नहीं है कि स्त्री का शोषण स्वतः व्यवस्था बदलते ही गायब हो जाए। मिशेल बरेट ने लिखा कि 'विचारधारा बौद्धिक अभ्यास मात्र नहीं है बल्कि ऐतिहासिक परिस्थितियों में निर्मित होती है और स्वायत्तता ग्रहण करती है।' फीचर लिखते समय इस दृष्टिकोण को भी दिमाग में अवश्य रखना चाहिए।

12.4 विषय का चयन

महिला लेखन से संबंधित किसी विषय के चयन का आधार क्या हो, इस मुद्दे पर हम इस भाग में विचार–विमर्श करेंगे। विषय का चयन करते हुए मुख्य बात जो ध्यान में रखने की है वह यह है कि उस विषय की प्रासंगिकता क्या है? क्या पाठक फीचर के इस विषय में रुचि लेंगे? साथ ही यह भी जरूरी है कि स्वयं आपके लिए यह विषय रुचिकर हो, आपका उस विषय पर पर्याप्त अध्ययन हो। इन्हीं सब पक्षों पर आगे हम विचार करेंगे।

12.4.1 रुचि और विशेषज्ञता

महिला लेखन की ओर उन्मुख होने वाले लेखक/लेखिका को चाहिए कि वह उसी क्षेत्र को चुने जिसमें उसकी रुचि हो। उदाहरण के लिए, किसी की रुचि समाजशास्त्रीय विषयों में हो सकती है, किसी की सांस्कृतिक विषयों में। महत्वपूर्ण यह है कि ऐसे किसी विषय को जहां तक संभव हो न चुनें जिसमें आपकी रुचि न हो। फीचर लेखक को अपना ज्ञान और अनुभव क्षेत्र विस्तृत रखना चाहिए। दूसरी बात जो ध्यान रखने की है, वह है विशेषज्ञता की। जिस विषय में आपकी रुचि हो, आपने अध्ययन किया हो, या जिसमें आपको विशेषज्ञता प्राप्त हो, उसे ही चुनें। जैसे, अगर आप किसी खास आदिवासी जाति की महिलाओं के बारे में फीचर लिखना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि आप आदिवासियों के संबंध में पर्याप्त अध्ययन करें। उस जाति विशेष के बारे में भी आपकी जानकारी हो। अगर ऐसा नहीं है और आप पहली बार आदिवासियों को अपने लेखन का विषय बनाना चाहते हैं, तो पहले उस बारे में पर्याप्त जानकारी हासिल कर लीजिए, तभी इस ओर उन्मुख होइए।

12.4.2 लेखन का उद्देश्य और प्रासंगिकता

किसी भी विषय का चयन करने से पूर्व यह विचार कर लीजिए कि आपने यही विषय क्यों चुना। इस विषय के द्वारा आप पाठकों तक क्या संदेश पहुंचाना चाहते हैं अर्थात् आपके लेखन का उद्देश्य और उसकी प्रासंगिकता क्या है? महिला लेखन के बारे में हम पिछली इकाई में बता चुके हैं कि आपके लेखन का उद्देश्य महिलाओं के बीच और महिलाओं के बारे में पूरे समाज में जागृति पैदा करना होना चाहिए। समाज में महिलाओं की वास्तविक स्थिति से लोगों को परिचित कराना, उनको समाज में बराबरी का दर्जा दिलवाना और उनके जीवन में सुधार और प्रगति लाने के लिए किए जा रहे प्रयत्नों को जनता तक पहुंचाना फीचर लेखन के उद्देश्य होने चाहिए। उदाहरण के लिए, आप अगर किसी ऐसी संस्था या महिला कार्यकर्ता का परिचय देते हैं जो दूरस्थ गांवों में रहने वाली निरक्षर महिलाओं में शिक्षा का प्रचार कर रही हैं तो आपका फीचर साक्षरता के प्रसार में मददगार साबित होगा क्योंकि यह संभव है कि आपका फीचर पढ़कर कुछ और युवक/युवतियां इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित हों। महिलाओं से संबंधित कोई समस्या चर्चा के केन्द्र में हो तो उस पर भी फीचर लिखा जा सकता है। जैसे, सांप्रदायिक उन्माद की वर्तमान स्थिति में सांप्रदायिक दंगों की शिकार महिलाओं पर फीचर तैयार किया जा सकता है।

12.4.3 पाठक वर्ग

फीचर के लिए विषय का चयन का एक आधार पाठक वर्ग भी है। विषय चुनते हुए यह भी विचार करें कि आप किसके लिए फीचर लिख रहे हैं। अगर आप सामान्य

पाठक के लिए लिख रहे हैं तो फीचर का विषय भी ऐसा चुनिए जो उसकी रुचि के अनुकूल हो। ऐसा विषय चुनने से पाठक की फीचर में रुचि जागृत होगी। उदाहरण के लिए, अगर आप शहरी मध्यवर्गीय लड़कियों/महिलाओं के लिए फीचर लिखना चाहती हैं तो महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर या व्यवसाय जैसे विषय रुचिकर हो सकते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि आप हमेशा पाठक की रुचि का ही ध्यान रखें, यह भी देखें कि आपके पाठकों को महिलाओं से संबंधित किन समस्याओं के प्रति जागरूक होना चाहिए। ऐसे विषयों पर भी फीचर तैयार कर सकते हैं। फीचर तैयार करते वक्त अपने पाठक की बौद्धिक–शैक्षिक स्थिति का ध्यान रखते हुए उसी के अनुकूल फीचर की भाषा–शैली तय करनी चाहिए। सामान्य पाठक वर्ग को आप बौद्धिक और जटिल विषय पर फीचर देंगे तो वह उसके लिए अरुचिकर होगा या विषय प्रासंगिक होते हुए भी शैली सुबोध और सरल नहीं होगी तो फीचर सामान्य पाठक के लिए ऊब पैदा करने वाला हो जाएगा।

12.4.4 प्रकाशन की प्रकृति

फीचर का विषय इस बात से भी तय होगा कि आप किस तरह की पत्र–पत्रिका के लिए फीचर तैयार कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, अगर आप किसी महिला पत्रिका के लिए फीचर तैयार कर रहे हैं तो यह ध्यान रखना होगा कि आपकी पाठक अधिकांशतः महिलाएं हैं। इसी तरह अगर आप किसी दैनिक पत्र के लिए फीचर तैयार कर रहे हैं तो आपके फीचर का पाठक वर्ग विस्तृत होगा और उसमें तरह–तरह की रुचि वाले पाठक होंगे। अगर कोई पत्रिका किसी खास क्षेत्र से ही संबंधित हैं जैसे फिल्म या खेलकूद तो उसमें प्रकाशित होने वाले फीचर भी इन्हीं से संबंधित होंगे। ऐसी स्थिति में आपको कुछ बातों का ध्यान रखना होगा जैसे, दैनिक समाचार–पत्र के पाठक किसी एक क्षेत्र से संबंधित नहीं होते इसलिए वहां कोई भी प्रासंगिक और रोचक विषय फीचर के लिए चुना जा सकता है। परंतु वहां विषय का बहुत गहराई या सूक्ष्मता से प्रस्तुतीकरण संभव नहीं है। इसी तरह विशिष्टता के किसी ऐसे क्षेत्र में भी दैनिक समाचार पत्र का पाठक रुचि नहीं लेगा जो उनके लिए न रुचिकर हो न प्रासंगिक। लेकिन ऐसे विषय पत्रिकाओं के लिए प्रासंगिक हो सकते हैं।

12.5 सामग्री का संकलन

महिलाओं से संबंधित विषयों के लेखन के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन लेखन शुरू करने से पहले ही कर लेना चाहिए। सामग्री के संकलन के आधार पर बहुत कुछ स्पष्ट हो जाएगा कि जिस विषय पर लेखन किया जाना है उसे आप क्या स्वरूप प्रदान कर सकते हैं। सामग्री संकलन में संबंधित विषय का अध्ययन और अनुसंधान, तथ्यों का संग्रह, संबंधित व्यक्तियों से साक्षात्कार और संबंधित छाया चित्र आदि आते हैं। जब विषय से संबंधित पर्याप्त सामग्री एकत्र हो जाए तो आप उसका अध्ययन कीजिए। जो आवश्यक हो उन्हें अलग कीजिए, रूपरेखा तैयार कीजिए और फिर लेखन शुरू कीजिए। यहां हम सामग्री संकलन के विभिन्न पक्षों का परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं।

12.5.1 विषय पर शोध

आपने लेखन के लिए जिस विषय का चयन किया है उस से संबंधित साहित्य का अध्ययन करके आपको मूलभूत जानकारी हासिल करनी चाहिए। उस विषय के

अध्ययन से आपको समस्या और उसके विभिन्न पक्षों की जानकारी मिल सकेगी। उदाहरण के लिए, आप अगर बाल विवाह से संबंधित फीचर लेखन तैयार करना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि आपको इस विषय पर अब तक हुए अध्ययनों की पर्याप्त जानकारी हो। बाल विवाह के कई पहलू हैं। कानूनी पहलू के अंतर्गत आपको यह जानकारी होनी चाहिए कि बाल विवाह के लिए लड़के–लड़कियों की न्यूनतम आयु क्या है, इनका उल्लंघन होने पर किस तरह का दंड दिया जा सकता है? क्या इन कानूनों का पालन होता है? क्या उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई होती हैं? अगर नहीं तो इसके क्या कारण हैं? ये और ऐसे कई प्रश्न सिर्फ बाल विवाह के कानूनी पहलू से जुड़े हैं। बाल विवाह का लड़कियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाला असर, इसके सामाजिक–सांस्कृतिक पक्ष आदि पर भी विस्तार से जानने की आवश्यकता होती है। जाहिर है, फीचर के लिए आप किसी विषय के किसी एक पहलू को लेना चाहेंगे। यही उचित भी है। अब आप उस पक्ष से जुड़े संभावित प्रश्नों को नोट कर लीजिए उसी के अनुसार सामग्री एकत्र कीजिए। सामग्री के दौरान आप संभावित प्रश्नों की संख्या बढ़ा–घटा सकते हैं। अगर आप किसी क्षेत्र विशेष जैसे राजस्थान में बाल विवाह प्रथा पर फीचर लिखना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि आप इनसे संबंधित अध्ययनों को तो पढ़ें ही, आपको स्वयं उन क्षेत्रों में जाकर 'आन द स्पॉट' जानकारी हासिल करनी चाहिए। अगर आप उन क्षेत्रों में जाएंगे तो आपको मालूम होगा कि जिन परिवारों में अब भी बाल विवाह प्रचलित है वे किन स्थितियों में रहते हैं, उनकी आर्थिक स्थिति क्या है, क्या वे परिवार अपने बच्चों को स्कूल भेज पाते हैं, विशेष रूप से लड़कियों को? क्या उन गांवों में शिक्षा की समुचित व्यवस्था है? उन परिवारों की सामाजिक स्थिति कैसी है? ये और इस तरह के प्रश्नों से टकराते हुए आप कई नई वास्तविकताओं से परिचित होंगे और आप एक प्रभावशाली फीचर के लिए महत्वपूर्ण सामग्री जुटा सकेंगे।

12.5.2 तथ्यों का संकलन

महिला लेखन से संबंधित फीचर के लिए आवश्यक तथ्यों का संकलन भी जरूरी है। इस बात को एक उदाहरण से समझें मान लीजिए, आपको दहेज हत्या से संबंधित मामले पर एक फीचर तैयार करना है। आपको इस घटना की पहली सूचना समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार से प्राप्त हुई है। फीचर लिखने के लिए इतनी जानकारी पर्याप्त नहीं है। जरूरी है कि आप स्वयं तथ्यों की 'फर्स्टहैंड' जानकारी हासिल करें। इसके लिए यह भी जरूरी है कि आप पहले वे क्षेत्र निर्धारित करें जिनसे संबंधित जानकारी आपके फीचर के लिए आवश्यक है। ये क्षेत्र निम्नलिखित हो सकते हैं–

1) दहेज हत्या, आत्महत्या या दुर्घटना? क्या इस पर विवाद है?

2) दहेज–हत्या का तात्कालिक कारण

3) इनसे संबंधित विभिन्न पक्ष क्या कहते है

   क) वधू पक्ष

   ख) लड़के के घर वाले

   ग) अन्य रिश्तेदार

   घ) पड़ोसी और परिचित

4) संबंधित महत्वपूर्ण कागजात

5) पुलिस का पक्ष

6) अन्य कोई सूचना

इस तरह की सूची किसी अन्य विषय के संबंध में भी बना सकते हैं। अब आप इसके आधार पर यह तय कीजिए कि आपको किन–किन लोगों से मिलना होगा और उनसे आपको क्या–क्या जानकारी मिल सकती है। संबंधित कागजात देखने या पाने की कोशिश कीजिए, जैसे संबंधित चिट्ठी–पत्री, डायरी या कोई अन्य जरूरी कागजात।

तथ्यों का संकलन करने की इस प्रक्रिया में यह अवश्य ध्यान रखें कि दहेज–हत्या जैसे मामलों में लोग आसानी से सच्चाई नहीं बताते या जानबूझकर आपको गुमराह करने की कोशिश कर सकते हैं। इसलिए सावधानी से बातचीत करें, स्वयं भावनाओं में न बहें और यह ध्यान रखें कि आप एक बहुत दायित्वपूर्ण काम कर रहे हैं।

12.5.3 साक्षात्कार

सामग्री का संकलन करने के लिए आपको लोगों से मिलना होगा। जैसे दहेज–हत्या वाले मामले में ही आपको बहू के रिश्तेदारों, परिचितों, पड़ोसियों आदि से मिलकर तथ्यों की जानकारी प्राप्त करनी होगी। आपको संबंधित पुलिस अधिकारियों से भी मिलना चाहिए। अगर कुछ महिला संगठन या अन्य सामाजिक संगठन इस मामले से जुड़ गये हैं तो उनके कार्यकर्ताओं से भी मिलकर तथ्यों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। इसके लिए आपको विभिन्न लोगों से साक्षात्कार लेना होगा। उपयोगी साक्षात्कार के लिए जरूरी है कि आप जिससे साक्षात्कार लेने जा रहे हैं उनसे क्या प्रश्न पूछेगे। फीचर लिखने में इस तरह के साक्षात्कारों का आप दो रूपों में प्रयोग कर सकते हैं। चाहें तो आप बातचीत में कही गई बात को फीचर में साक्षात्कार के फॉर्म में ही प्रस्तुत करें और चाहें तो बातचीत से प्राप्त जानकारी को वर्णनात्मक रूप में पेश कर दें। साक्षात्कार के दौरान कही गई बातों की सत्यता की परीक्षा अवश्य कर लेनी चाहिए। यह आवश्यक नहीं है कि संबद्ध लोग आपसे बातचीत के दौरान सही बात ही कहें। इसलिए बेहतर यही है कि आप एक से अधिक लोगों से मिलें और सावधानीपूर्वक जांच कर लें कि किसकी बात प्राप्त तथ्यों से मेल खाती है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है कि अगर आपने लोगों द्वारा कही गई बातों को बिना जांचे मान लिया तो संभव है कि आप फीचर में नितांत गलत नतीजों तक पहुंच जाएं।

12.5.4 फोटो और अन्य सामग्री

फीचर के साथ आप अगर संबंधित फोटो भी देंगे तो आपका फीचर और अधिक प्रभावशाली होगा। दहेज–हत्या से संबंधित फीचर के साथ दहेज की शिकार महिला की तस्वीर दी जानी चाहिए। इसी प्रकार खेतों या कारखानों में काम करने वाली स्त्रियों से संबंधित फीचर के साथ महिलाओं को खेतों या कारखानों में काम करते हुए दिखाया जा सकता है। बाल विवाह से संबधित फीचर के साथ बाल विवाह से संबंधित फोटो चित्र दिए जा सकते हैं। कभी–कभी फीचर के साथ रेखाचित्र या कार्टून देना भी उपयोगी हो सकता है। मुख्य बात यह है कि चित्र फीचर से संबद्ध और उसके प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाने वाला हो।

फीचर के साथ देने के लिए छायाचित्र आदि यथासंभव पहले से एकत्र कर लेने चाहिए। जब आप सामग्री संकलित कर रहे हों तब भी और अगर आप पत्रकारिता के व्यवसाय में हैं तो वैसे भी अपनी रुचि के विभिन्न विषयों पर फोटो वगैरह एकत्र करते

रहना चाहिए ताकि जब आवश्यक हो, आप तैयार किये जाने वाले फीचर के साथ उनका उपयोग कर सकें।

फीचर के साथ अगर आप विषय से संबंधित किसी दस्तावेज की प्रतिलिपि देना चाहें तो उसकी उपयोगिता पर विचार कर लीजिए।

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) राजस्थान की भील जाति की महिलाओं के संबंध में फीचर तैयार करने के लिए आप फीचर लेखक में किस योग्यता की अपेक्षा करेंगे? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या उपर्युक्त विषय पर फीचर लिखना उपयुक्त होगा? यदि हां, तो क्यों? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) इस फीचर में किस तरह के पाठक रुचि लेंगे और क्यों? लगभग पांच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) अगर आपको उपर्युक्त विषय पर फीचर लिखना है, तो लेखन से पूर्व आप क्या–क्या तैयारी करेंगे? लगभग पांच पंक्तियों में बताइए।

.....

.....

.....

.....

12.6 सामग्री का संयोजन और संपादन

फीचर लिखने के लिए आवश्यक अध्ययन और सामग्री का संकलन हो जाने पर आपको प्राप्त सामग्री का संयोजन और संपादन करना होगा। यानी कि सामग्री में से उपयोगी और आवश्यक सामग्री का चयन करना होगा, उसे एक सही क्रमबद्धता देनी होगी, उनका ठीक से अध्ययन करके फीचर की रूपरेखा बनानी होगी। इतना करने पर आप एक प्रभावशाली फीचर लिख सकेंगे। इस बात को एक उदाहरण से समझें। मान लीजिए, आप बाल विवाह पर एक फीचर तैयार कर रहे हैं। इसके लिए आपने पहले तो बाल विवाह से संबंधित कुछ पुस्तकों का अध्ययन किया होगा। उनसे प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण बातों के नोट लिए होंगे। जैसे बाल विवाह से संबंधित समाज सुधार आन्दोलनों का इतिहास और उनका योगदान, बाल विवाह निषेध से संबंधित कानून और बाल विवाह के सामाजिक–सांस्कृतिक, स्वास्थ्यपरक आदि विभिन्न पक्षों पर भी आपको कुछ उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई होगी। निश्चय ही इन सब बातों का उपयोग आप अपने फीचर में नहीं कर पाएंगे, लेकिन यह अध्ययन आपको समस्या के विभिन्न पक्षों को समझने में मददगार होगा। हां, कुछ बातों को आप अपने फीचर में शामिल करना चाहेंगे। ऐसी बातों को अलग कर लीजिए। दूसरी चीज आपके पास 'आन द स्पॉट' ली गई जानकारी है। मान लीजिए, आपने राजस्थान के किसी गांव में जाकर बाल विवाह की स्थिति का अध्ययन किया है तो वहां से आपको कई बातें मालूम हुई होंगी। आपके फीचर का उद्देश्य भी राजस्थान के क्षेत्र विशेष में बाल विवाह की स्थिति को उजागर करना है। अब आपके सामने दो तरह की जानकारियाँ हैं–एक, वे जो आपको अपने अध्ययन से प्राप्त हुईं, दूसरी वे जो आपको अपने विषय से संबंधित क्षेत्र से प्राप्त हुई। अब आपको दोनों जानकारियों का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए। इससे आपको कई नये और रोचक निष्कर्ष प्राप्त होंगे। जैसे, आपको मालूम हो सकता है कि बाल विवाह के निषेध संबधी कानून बनने के इतने वर्षों बाद भी राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में न सिर्फ निर्बाध रूप से बाल विवाह प्रचलित है, बल्कि उनको रोकने में सरकारी मशीनरी और कानून अक्षम हैं। यह भी मालूम होगा कि ऐसे क्षेत्रों में लड़कियों में शिक्षा न के बराबर है, लड़कियों के लिए पर्याप्त स्कूल भी नहीं हैं और उनको स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित करने वाला माहौल भी नहीं है। जब आप तथ्यों के साथ इन निष्कर्षों तक पहुंचेंगे तो आपका फीचर निश्चय ही प्रभावशाली बन सकेगा। लेकिन यह तभी संभव है जब आप सामग्री को एक व्यवस्थित रूप दें, उसका सावधानीपूर्वक अध्ययन करें, उसे अपने उद्देश्य के अनुसार संयोजित करें। हम यहां एक फीचर का अंश दे रहे हैं। आप देखेंगे, यहां अध्ययन से प्राप्त जानकारी ने फीचर के प्रभाव को बढ़ा दिया –

''आधुनिक भारत के इतिहास में महिला को जीने का मूलभूत अधिकार देने वाला पहला कानून 1829 में पास हुआ। तब सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने का कानून बना। इसके बावजूद 1987 में देवराला की रूपकंवर सती हुई। इस जघन्य कृत्य पर रोक लगाने और सती की पूजा करने के लिए प्रेरित करने पर प्रतिबंध के ताजा कानूनों के बाद भी सती प्रथा को धार्मिक अनुष्ठान बनाने वाले पुरी के शंकराचार्य के खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की गई। जिस देवराला गांव में रूपकंवर सती हुई थी, उसे एक पवित्र स्थान माना जाता है।''

(फेमिना हिन्दी, अक्टूबर 1990)

उपर्युक्त अंश में आप देख सकते हैं कि 1829 के कानून और सती की पूजा आदि पर प्रतिबंध लगाने वाले नए कानूनों का हवाला देकर लेखक ने देवराला की घटना की विकरालता को और अधिक उजागर किया है। ये हवाले तभी दिये जा सके जब लेखक को उनकी जानकारी थी और इसी प्रकार देवराला से संबंधित कई घटनाओं की जानकारी ने उपर्युक्त कथन को संभव बनाया। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि फीचर लेखक सामग्री का सही ढंग से संयोजन कर उन्हें अपने उद्देश्यों के अनुसार आवश्यक रूप प्रदान करे।

12.7 फीचर का लेखन

महिलाओं से संबंधित फीचर लिखने से पहले की गई तैयारी पर ही फीचर का लेखन निर्भर करेगा। फीचर लिखना आरंभ करने से पूर्व उसकी रूपरेखा अवश्य बना लीजिए। फिर यह तय कीजिए कि आप अपने फीचर का आरंभ किस तरह से करेंगे। आपके फीचर की प्रस्तुति उसके विषय पर निर्भर करेगी और इस पर भी निर्भर करेगी कि आप किस तरह की पत्र–पत्रिका के लिए लिख रहे हैं और उसका पाठक वर्ग कौन–सा है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए आप फीचर की प्रस्तुति निर्धारित कीजिए।

12.7.1 आरंभ

फीचर का आरंभ कैसे किया जाए, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। जैसा कि हम पहले भी बता चुके हैं, फीचर का आरंभ करने की कोई बनी–बनायी विधि नहीं है। लेकिन यह अवश्य है कि आरंभ रोचक ढंग से होना चाहिए। इसके साथ ही आपके उद्देश्य की पूर्ति करने वाला भी। आमतौर पर जिस विषय पर फीचर लिखा जा रहा है, उसका आरंभ में परिचय देना आवश्यक–सा हो जाता है। लेकिन यह परिचय न तो बहुत लंबा हो न उबाऊ। 'वामा' में प्रकाशित एक फीचर लेख 'जी हां, हम अखबार बेचती हैं' में सड़कों पर अखबार बेचने वाली महिलाओं को विषय बनाया गया। इस फीचर का आरंभ महिला हॉकरों का परिचय देने से हुआ है –

''जब कभी 'हॉकर' का नाम सुनते हैं तो आंखों के समक्ष एक पुरुष आकृति उभरती है जो साइकिल पर सवार रोज सुबह आपके घर में अखबार फेंक जाता है। पर आपने कभी 'लेडीज हॉकर्स' के बारे में सोचा है। दोपहर तीन बजे के बाद आप आई.टी.ओ., कनॉट प्लेस, मेडिकल या किसी भी अन्य चौराहे पर चले जाएं–आपको कुछ महिलाएं एक हाथ में नन्हे से बच्चे को संभाले और दूसरे हाथ में तीस–चालीस अखबारों (सांध्य दैनिकों) का बंडल उठाए इधर–उधर दौड़ती मिल जाएंगी। ये ही हैं 'महिला हॉकर्स' यानी अखबार बेचने वालियां।''

उपर्युक्त आरंभिक अंश में आप पाएंगे कि लेखिका ने फीचर के विषय का परिचय दिया है परन्तु यह परिचय अत्यंत रोचक ढंग से दिया गया है। अगर परिचय को सीधे वर्णनात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता तो उसका वैसा प्रभाव नहीं पड़ता, भले ही उपर्युक्त सभी बातें उसमें समेट ली जातीं। नीचे हम उपर्युक्त अंश का ही ऐसा वर्णनात्मक रूप देखते हैं–

''आपने हॉकर के रूप में पुरुषों को ही देखा होगा, लेकिन 'लेडीज हॉकर्स' भी होती हैं। आई.टी.ओ., कनॉट प्लेस, मेडिकल आदि चौराहों पर बच्चों को गोद में लिए अखबार बेचने वाली महिलाएं 'महिला हॉकर्स' ही हैं।''

आप स्वयं तुलना करके देख सकते हैं कि पहले वाला अंश कहीं अधिक प्रभावशाली है। दूसरे वाले अंश में भी वही बातें कहीं गई हैं, परन्तु उसमें केवल तथ्यों का अभिधात्मक वर्णन है इसलिए उसमें कोई रोचकता उत्पन्न नहीं हो सकी है।

कभी–कभी फीचर की शुरुआत किसी उत्तेजक वैचारिक टिप्पणी से भी की जा सकती है। जैसे, 'फेमिना' में प्रकाशित एक फीचर **'कितनी पीछे हैं सामान्य स्त्रियाँ'** का निम्नलिखित आरंभिक अंश देखिए –

''इसका उत्तर सकारात्मक भी हो सकता है और नकारात्मक भी। अगर अपने आपको विश्व का एक महत्वपूर्ण और अखंड अंग मानती हैं तो हां, आज स्त्री में परिवर्तन आ रहा है। पहले की अपेक्षा अधिक तेजी से उसमें बदलाव आ रहा है। लगभग उसे एक छवि से दूसरी छवि में परिवर्तित कर दिया गया है। पर एक क्षण के लिए अगर वह अपने आसपास फैले विश्व का अवलोकन करें तो उसे आश्चर्य होगा कि उसके इर्द–गिर्द का संसार उतनी तेजी से नहीं बदल रहा है।''

निम्नलिखित फीचर की शुरुआत एक घटना के उल्लेख से की गई है –

''घर में नन्ही बहन के आने की खुशी में झूमती मगर सधी चाल से हाथों में दूध का एक गिलास कस कर थामे एक चंचल–सी बच्ची चली जा रही थी। उसे नहीं मालूम कि यह दूध नहीं बल्कि जहर है जिसे उसकी दादी या ताई उसकी नन्ही बहन को पिलाकर मार डालेगी। कल्लर जाति के लोग घर में कन्या का जन्म अभिशाप मानते हैं। इसलिए महिलाएं जन्म के तीन दिन के अंदर ही उसे एक जहरीले पौंधे का दूध पिलाकर या फिर उसके नथुनों में भूसा ठूंसकर मार डालती हैं। तमिलनाडु के मदुरै जिले के उसिलमपट्टी ब्लॉक के एक गांव में रहते हैं ये लोग।''

(बेटे से अच्छी है बेटीः संजय स्वतंत्र, रविवारी जनसत्ता, 23 दिसम्बर 1990)

उपर्युक्त फीचर समाज में बालिकाओं की स्थिति को लेकर लिखा गया है। आरंभ में नवजात लड़कियों को मारने की कुप्रथा का जिक्र करके लेखक ने पूरे फीचर को एक मार्मिक और हृदयस्पर्शी रूप दे दिया है। फीचर में बाद में जो बातें कही गई हैं उनका महत्व यह है कि इस घटना से समस्या की विकरालता का बोध पाठक को आरंभिक पंक्तियों में ही हो जाता है।

ऊपर के उदाहरणों से साफ है कि फीचर की शुरुआत ऐसी होनी चाहिए जो पाठक को आरंभ में ही बांध ले। महिलाओं के फीचर में यह तभी संभव है जब उनके प्रति सहानुभूति का भाव व्यक्त किया गया हो और उनकी समस्याओं के प्रति गहरी चिंता व्यक्त हुई हो।

12.7.2 मध्य

फीचर के मध्य भाग में विषय से संबंधित अंतर्वस्तु प्रस्तुत की जाती है। इसको कितना विस्तार देना है, कौन–सी बातें शामिल की जानी हैं और उन्हें किस क्रम से और कैसे प्रस्तुत किया जाना है, इस पर गंभीरतापूर्वक विचार कर लेना चाहिए। यहां हम उदाहरण के लिए **'जी हां, हम अखबार बेचती हैं'** फीचर के मध्य भाग को लें। इस फीचर को कुल तेरह पैरे में पेश किया गया है। जिस तरह पहले पैरे में विषय का परिचय दिया गया है, उसी तरह अंतिम पैरा 'उपसंहार' की तरह है। मध्य के पैरे में निम्नलिखित विषयों को छुआ गया है।

1) महिला हॉकर और पुरुष हॉकर के काम का भेद

2) काम में प्रवीणता

3) महिला हॉकरों का परिचय

4) रोजगार की समस्या और उनका निवारण

5) कार्य काल की विशेषता

6) अन्य कार्यों को करने की सुविधा

7) आय

8) काम से संबंधित समस्याएं ।

9) पुलिस का व्यवहार

10) एवं 11) नारीत्व की समस्या

उपर्युक्त परिच्छेदों में उठाये गये मुद्दों से महिला हॉकरों के संबंध में निम्नलिखित जानकारी प्राप्त होती है।

1) महिला हॉकरों के काम की प्रकृति

2) महिला हॉकरों की पारिवारिक–सामाजिक स्थिति

3) कार्य की प्रकृति और उससे संबंधित समस्याएं ।

4) आय और रोजगार के अन्य साधन

अगर हम विचार करें तो आसानी से समझ सकते हैं कि उपर्युक्त जानकारी महिला हॉकरों के बारे में एक सूचनात्मक और उपयोगी फीचर लिखने के लिए पर्याप्त है।

अब प्रश्न यह है कि इन समस्त सूचनाओं को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके लिए लेखिका ने इन महिला हॉकरों से स्वयं संपर्क किया, उनसे बातचीत की, उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी हासिल की और फिर उनको आधार बनाकर फीचर तैयार किया। इसलिए फीचर में महिला हॉकरों से की गई बातचीत के उद्धरण दिए गए हैं। अब आप स्वयं फीचर का मध्य भाग पढ़कर उपर्युक्त विशेषताओं को पहचान सकते हैं।

मध्य भाग को लिखने का यही एक तरीका नहीं है, लेकिन आपकी प्रस्तुति हर हाल में तथ्यात्मक और सुरुचिपूर्ण होनी चाहिए। आप अपनी बात निबंध शैली में न कहें बल्कि अपनी बात कहते हुए बराबर घटनाओं, आंकड़ों, उदाहरणों आदि द्वारा उसको सम्पुष्ट करते रहें घटनाओं का वर्णन या संबद्ध लोगों के कथन का उद्धरण न केवल फीचर को विश्वसनीय बनाता है, बल्कि उसमें रोचकता भी पैदा करता है।

12.7.3 अंत

फीचर का अंतिम भाग आमतौर पर उपसंहार के रूप में लिखा जाता है। आपने फीचर के लिए जो विषय उठाया है, उससे निकलने वाला निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकते हैं, कही गई बातों का सार दे सकते हैं, पाठकों को कोई संदेश दे सकते हैं या आगाह कर सकते हैं, उनका आह्वान कर सकते हैं। अलबत्ता फीचर के अंत में ऐसा कुछ अवश्य

होना चाहिए जो फीचर को सोद्देश्यपूर्ण परिणति तक ले जाए। महिला हॉकरों से संबंधित फीचर के अंतिम अंश में लेखिका ने जहां एक ओर फीचर में कही गई बातों से निकलने वाला निष्कर्ष प्रस्तुत किया है, वहीं पाठकों या समाज को उनकी स्थिति के प्रति सचेत भी किया है –

1) *''खबरें पाठक तक पहुचने का एकमात्र साधन हॉकर है, चाहे वह अखबार किसी बुक स्टाल से खरीदा हो, सड़क से या फिर आपके घर आया हो। पर विडंबना है कि बुद्धिजीवियों के इस संसार में सूचना प्राप्त करने का जो स्रोत है वह स्वयं ही अनपढ़, अशिक्षित और सूचना के प्रयोजन से परे है। महिला हॉकरों की स्थिति तो और भी विकट है। चिलचिलाती धूप, तेज वर्षा, ठिठुरती सर्दी या सार्वजनिक अवकाश उन पर कहर ढाते हैं क्योंकि उस दिन अखबार बेचना मुश्किल हो जाता है।''*

2) *''घर में आकर अखबार फेकने वाले हॉकरों की अपेक्षा इन महिला हॉकरों का काम अधिक कठिन है क्योंकि वह तो आप की इच्छा न होते हुए भी रोज आप के सिर पर अखबार थोप जाता है, पर इन महिला हॉकरों को रोज एक नई चुनौती का सामना करना पड़ता है। रोज इनके सामने एक नया प्रतिद्वंद्वी खड़ा हो जाता है। फिर सांध्य दैनिकों का महत्व एक निश्चित कालावधि तक ही होता है। अतः इस निश्चित समय में सारे अखबार बेचना कोई मामूली काम नहीं है और यह भागादौड़ी केवल एक दिन की नहीं, अपितु जीवन भर की है।''*

3) *''ऐसी कुछ महिला हॉकरों का निरीक्षण करने के बाद कुछ एक तथ्य सामने आए हैं। सबसे गौरतलब बात यह है कि इनमें से कोई भी महिला शिक्षित नहीं है। किन्तु मजाल है जो वे ग्राहक को मांगा गया अखबार देने से चूक जाएं। शकुंतला बताती हैं कि हमें सभी अखबारों की अच्छी पहचान हो गई है। इसीलिए कभी देने में कोई चूक नहीं होती है।''*

4) *''अधिकांशतः ये महिलाएं दक्षिण भारत से आई हैं। पेट की आग उन्हें अपनी जमीन से दूर यहां ले आई। केरल निवासी मरियम्मा को यहां रहते आठ साल हो गए हैं। आठ साल से वह अखबार बेचने का काम ही कर रही हैं। पर आज भी अपने गांव की याद में उसकी आंखें नम हो जाती हैं। वह कहती हैं कि अगर गांव में रोटी मिल जाती तो यहां आते ही नहीं, 'क्या अखबार बेचने से जो पैसा मिलता है वह काफी होता है?' यह पूछने पर मरियम्मा का जवाब था, 'रोटी लायक मिल ही जाता है। गांव में भूखे मरते थे।''*

5) *''भूख, अकाल, गरीबी आदि प्राकृतिक विपदाओं से विस्थापित होकर आए इन लोगों को यहां आकर रोजगार की बड़ी समस्या हुई। भाषा का ज्ञान न होने के कारण वे कोई भी व्यवसाय नहीं अपना सकती थीं। शारीरिक रूप से सशक्त न होने के कारण मेहनत मजदूरी वाला काम इनसे हो नहीं सकता था। फिर यहां के ऋतुओं की अतिवादिता भी उन्हें परेशान करती है। इन सब बातों को मद्देनजर रखते हुए उन्होंने अखबार बेचने का पेशा अपनाया और सभी लोग इसी व्यवसाय में कूद पड़े। यहां तक कि कई–कई परिवारों के सभी सदस्य अखबार ही बेचते हैं, चाहे वह दादी हो या पोता।''*

6) *''इस संबंध में मणि का मत उल्लेखनीय है। वह कहती है कि इस धंधे में समय की बचत होती है। अमूमन दोपहर तीन बजे के बाद ही सांध्य दैनिक सड़कों*

पर बिकने आते हैं और लगभग सात बजे तक उनका बिकना खत्म हो जाता है। यानी मात्र चार घंटे ही काम करना पड़ता है। सुबह से तीन बजे तक महिलाएं कुछ और भी काम कर सकती हैं और शाम सात बजे के बाद वे घर के काम के लिए फ्री हो जाती हैं।''

7) *''ज्यादातर ये महिलाएं घरों में झाड़ू–चौके का काम करती हैं, तीन बजे तक अपना सारा काम निपटा कर वे अपने गंतव्य पर पहुंच जाती हैं। वहां से अपने अखबारों का बंडल उठाकर फिर सड़कों पर निकल आती हैं। सभी हॉकरों का एरिया बंटा हुआ है और वे एक–दूसरे के क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करते हैं। शाम सात बजे तक जितने अखबार बिक जाते हैं उन्हें बेचकर बाकी बचे हुए अखबार वे घर ले जाती हैं और दूसरे दिन उन्हें डिपो पर लौटा देती हैं। इन लौटाए गए अखबारों की कीमत को दूसरे दिन के अखबारों से घटा लिया जाता है।''*

8) *''एक दिन में वे कितना कमा लेती हैं, इसके बारे में तो किसी ने स्पष्ट रूप से नहीं बताया पर सब का मत है कि इतना मिल ही जाता है कि चाय–पानी का खर्चा चल जाता है। पर इतना तो स्पष्ट है कि उन्हें इस धंधे में फायदा अवश्य होता होगा अन्यथा वे अपने बच्चों को भी अखबार बेचने के लिए मजबूर न करते। नौ वर्षीय गुड़िया पिछले एक साल से अखबार बेच रही है। उसकी मां, पिता, दादा, सब यही काम करते हैं। गुड़ियों से खेलने की उम्र में गुड़िया घर को आर्थिक फायदा पहुंचा रही है, पर वह इसका महत्व नहीं जानती। उसने तो जब से आंखें खोलीं, अपने आसपास अखबार ही अखबार फैले देखे। सोचने–समझने लगी तो मां ने अखबार का एक बंडल उसके हाथ में भी पकड़ा दिया। पहले वह अपने दादा के पास बैठकर बेचती थी, पर अब उसे अखबार की परख और धंधे के गुर आ गए हैं। इसीलिए वह इधर–उधर दौड़कर अखबार बेचती है। गुड़िया गर्व से बताती है कि वह बड़ी होकर अखबार ही बेचेगी क्योंकि वह इसे अपना पुश्तैनी धंधा समझती है।''*

9) *''ज्यों–ज्यों महिलाओं के लिए व्यवसाय के द्वार खुलते जा रहे हैं, त्यों–त्यों उनकी समस्याओं की संख्या बढ़ती जा रही है। चार घंटे अखबार बेचने के लिए इन महिला हॉकरों को चार सौ समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।''*

10) *''लगभग सभी महिलाओं ने पुलिस के व्यवहार को लेकर शिकायत की। उनका कहना था कि पुलिस उनसे बहुत बेरुखी से पेश आती है। उन्हें फुटपाथ पर खड़े होकर अखबार नहीं बेचने देती। उनमें से थोड़ी समझदारी रखने वाली महिलाओं ने माना कि अगर हम फुटपाथ पर अखबार बिछाकर बैठ जाएंगी तो आने–जाने वाले लोगों को तकलीफ होगी। पर खड़े होकर या इधर–उधर टहलकर अखबार बेचने में तो कोई नुकसान नहीं। आखिरकार हमें भी पेट भरना है। सबसे ज्यादा कोफ्त इन महिलाओं को इस बात की है कि पैसा लेकर तो पुलिस बैठने देती है। नाम न बताने की शर्त पर एक महिला ने कहा 'थोड़ा बहुत जो हम कमा लेते हैं उसमें से भी अगर इन पुलिस वालों को दे देंगे तो अपने परिवार को क्या खिलाएंगे।''*

11) *''दूसरी इनकी सामने समस्या है इनके नारीत्व का अपमान। किसी भी स्त्री के लिए वह स्थिति सबसे दयनीय होती है जब उसकी उन्नति का कारण उसकी योग्यता को न मानकर उसके स्त्री होने को माना जाए। कुछ ऐसी ही स्थिति इन महिला हॉकरों की है।''*

12) *''इसीलिए वे अधिकतर अपने अन्य साथियों के साथ ही रहती है, पर कोई आश्चर्य नहीं कि कुछ लोग ऐसे अवश्य होते होंगे क्योंकि अगर खरीदार अखबार खरीद कर उस महिला की रात की रोटी का इंतजाम कर रहा है तो वह यकीनन दानवीर कर्ण जैसा विशाल हृदय नहीं रखता होगा।''*

ध्यान देने की बात यह है कि उपर्युक्त अंश में यद्यपि कोई सुझाव या निष्कर्ष नहीं निकाला गया है परंतु हॉकरों की स्थिति पर लिखे इस फीचर से समाज के एक अत्यंत दीन–हीन समुदाय की वास्तविक स्थिति से परिचय तो होता ही है। इसी तरह के फीचर धीरे–धीरे उनके पक्ष में जन सहमति बनाने का काम करते हैं। बाद में कोई स्वैच्छिक संगठन या राजनीतिक दल इनके मामले को उठाकर इनके पक्ष में कोई कारगर कदम उठाने के लिए सरकार और प्रशासन को प्रेरित कर सकता है।

अब एक और फीचर का अंतिम भाग देखिए। इसमें पाठकों को सुझाव दिया गया है –

''बालिकाओं के सहज विकास के लिए जरूरी है कि उनकी शिक्षा, पहनावा, स्वास्थ्य और उनकी तमाम बुनियादी जरूरतों के प्रति उपेक्षा न बरती जाए। माता–पिता को यह नहीं सोचना चाहिए कि उनकी लड़कियाँ लड़कों से कम हैं। हर साल बोर्ड के नतीजे गवाह हैं कि लड़कियों ने पढ़ाई में लड़कों को काफी पीछे छोड़ दिया है। इस बालिका वर्ष में भी लड़कियों ने पढ़ाई और खेलों में कम बाजियां नहीं जीतीं। लड़कियाँ भविष्य के समाज की नींव हैं। ये आगे बढ़ेगी तो हमारा कल का समाज भी आगे बढ़ेगा।''

(बेटे से अच्छी है बेटी, संजय स्वतंत्र, रविवारी जनसत्ता, 23 दिसम्बर 1990)

ऊपर का उद्धरण फीचर को सोद्देश्यपूर्ण ढंग से समाप्त करता है।

12.7.4 शीर्षक

फीचर का रोचक और आकर्षक शीर्षक देना भी आवश्यक है क्योंकि पाठक सबसे पहले शीर्षक ही पढ़ता है। शीर्षक तय करते समय जहां फीचर की विषयवस्तु का ध्यान रखें, वहीं यह भी देख लें कि आपका शीर्षक विषय की मूल भावना के नजदीक हो। विषय की अभिधात्मक सूचना देने वाला शीर्षक प्रभावशाली नहीं होता। अगर फीचर में कोई महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया गया हो तो आप प्रश्नात्मक ढंग से शीर्षक बना सकते हैं। जैसे, लड़कियों के साथ बरते जाने वाले भेदभाव को लेकर आपने फीचर लिखा है। आप इस फीचर का शीर्षक सरल–सा भी दे सकते हैं– 'बालिकाओं के साथ भेदभाव' या 'लड़कियों से भेदभाव'। विषय–वस्तु की दृष्टि से आपका शीर्षक उचित है परंतु प्रभावशाली नहीं। इसे आप कुछ बदलकर प्रश्न रूप में रखें तो शीर्षक ज्यादा आकर्षक हो जाएगा। जैसे––'बच्ची से भेदभाव क्यों? यह शीर्षक ऊपर के दोनों शीर्षकों से ज्यादा असरदार है।

शीर्षक को आकर्षक बनाने का तरीका यह भी है कि शीर्षक को वाक्य या वाक्यांश (गद्य) के रूप में रखने की बजाय थोड़ा–सा काव्यात्मक या भावनात्मक स्पर्श दे दें। जैसे निम्नलिखित शीर्षक –

घट रही है लड़कियों की तादाद

(लड़कियों की तादाद घट रही है)

दिखावटी ही नहीं होतीं सेल्स गर्ल

(सेल्स गर्ल दिखावटी ही नहीं होतीं)
बेटे से अच्छी है बेटी (बेटी बेटे से अच्छी है)
कितनी पीछे हैं सामान्य स्त्रियाँ
(सामान्य स्त्रियाँ कितनी पीछे)

उपर्युक्त शीर्षकों को कोष्ठक में दिये गये वाक्यों से तुलना करने पर स्पष्ट हो जाएगा कि वाक्य में हल्का–सा हेरफेर करने से शीर्षक को आकर्षक बनाया जा सकता है। कई बार सकारात्मक और दृढ़ निश्चयी कथन भी शीर्षक के रूप में अच्छे लगते हैं। जैसे–'जी हां, हम अखबार बेचती हैं।' कहने का तात्पर्य यही है कि फीचर का शीर्षक विषय की सूचना देने वाला तो हो ही, वह रोचक और आकर्षक भी हो।

12.8 भाषा–शैली

फीचर लेखन की कोई निश्चित भाषा–शैली नहीं है। इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि फीचर निबंध या लेख की तरह शुष्क और गंभीर न हो। स्त्रियों के बारे में स्त्री की भाषा में ही लिखा जाना चाहिए। यह नारीवादी चिन्तकों की आम राय है। स्त्रियों को अलग भाषा की जरूरत क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए वर्जीनिया वुल्फ ने अपने लेख 'वूमेन ऐंड फिक्शन में लिखा है कि 'किन्तु आज भी यह सच है कि इससे पहले कि एक स्त्री वह लिख सके जो वह लिखना चाहती है, उसे कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। सबसे पहले तो तकनीकी और शिल्प (जो प्रकटतः बहुत सरल, वास्तव में बहुत अस्पष्ट है) के स्तर पर कठिनाई पेश आती है कि वाक्य–गठन के प्रचलित रूप उसे अनुकूल नहीं लगते। यह पुरुष निर्मित वाक्य है, जो स्त्री के उपयोग के लिहाज से बहुत शिथिल, बहुत भारी, बहुत औपचारिक है। मैरी हाइट ने लिखा है कि 'स्त्रियां भावों के रूपायन की बजाय विशेषणों के जरिए भावों के रूपायन पर ज्यादा जोर देती हैं। वे उभयपक्षीय और अंतर्विरोधी भाषा का ज्यादा प्रयोग करती हैं। वे हमेशा निश्चितता की बजाय 'संभावना' की शैली का ज्यादा प्रयोग करती हैं'। स्टेनले जूरिया ने लिखा है कि 'स्त्री पहचान के जो शब्द मिलते हैं वे प्रायः नकारात्मक अर्थ को व्यक्त करते हैं। हमारी भाषा में ऐसे शब्दों का अभाव है जो पुरुष की तुलना में स्त्री की प्रभुता को व्यंजित करें अथवा समानता के द्योतक हों'। मेरी हाइट ने 'दि वे वूमेन राइट' (1977) में लिखा कि स्त्रियों के अमूमन छोटे–छोटे वाक्य होते है, ये सरल होते हैं, इन वाक्यों में ही मूल निर्णय भी होता है। आमतौर पर फीचर का पाठक समुदाय काफी विस्तृत होता है इसलिए भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सामान्य पाठक वर्ग के लिए भी संप्रेष्य हो। फीचर की भाषा में सहजता और सरलता के साथ–साथ रोचकता भी होनी चाहिए। यह तभी संभव है जब आप शब्दों के चयन और बनावट में साहित्यिक स्पर्श दें। जैसे फीचर का निम्नलिखित अंश देखे –

*''नौ वर्षीय गुड़िया पिछले एक साल से अखबार बेच रही है। उसकी मां, पिता, दादा सब यही काम करते हैं। **गुड़ियों से खेलने की उम्र में** गुड़िया घर को आर्थिक फायदा पहुंचा रही है, पर वह इसका महत्व नहीं जानती। उसने तो जब से **आंखें खोलीं**, अपने आस–पास **अखबार ही अखबार** फैले देखे। सोचने–समझने लगी तो मां ने **अखबार** का एक बंडल उसके हाथ में भी पकड़ा दिया। पहले वह अपने दादा के पास बैठकर बेचती थी, पर अब **अखबार की परख** और **धंधे के गुर** आ गए हैं। इसीलिए वह इधर–उधर दौड़कर अखबार बेचती है।''*

'**जी हां, हम अखबार बेचती हैं**' शीर्षक फीचर का उपर्युक्त अंश अखबार बेचने के धंधे में लगी एक छोटी–सी बच्ची का चित्र प्रस्तुत करता है। गुड़िया का उदाहरण लेकर अखबार बेचने वाले छोटे–छोटे बच्चों का मार्मिक चित्र प्रस्तुत कर दिया गया है। यह शैली ज्यादा प्रभावशाली है, बनिस्बत इसके कि लेखिका वर्णनात्मक ढंग से अखबार बेचने वाली बच्चियों के बारे में सूचनाएं दे देती। दूसरे, ऊपर के अंश में रेखांकित वाक्यांश में बात को सीधे न कहकर उसे साहित्यिक ढंग से लिखा गया है। इससे लेखिका का कथन अधिक पठनीय और रुचिकर बन पड़ा है।

फीचर की भाषा पत्रकारिता की भाषा की तरह बोधगम्य तो होनी चाहिए परंतु उसमें भावप्रवणता और तरलता भी आवश्यक है। इससे फीचर मात्र समाचार नहीं रहता। महिलाओं से संबंधित फीचर लेखन की भाषा में इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी ऐसी बात, या वाक्य या शब्द का इस्तेमाल न हो जिसमें स्त्रियों के प्रति असम्मान व्यक्त होता हो ।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) कामकाजी महिलाओं की समस्याओं से संबंधित फीचर के लिए आप क्या–क्या तैयारी करना चाहेंगे? पांच पंक्तियों में बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) उपर्युक्त विषय का लेखन आरंभ करने के लिए किन–किन बातों को आप फीचर के आरंभ में समाविष्ट करना चाहेंगे? तीन पंक्तियों में उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) उपर्युक्त विषय के मुख्य सामग्री की संक्षिप्त रूपरेखा बनाइए जिसके आधार पर आप फीचर का मध्य भाग लिखेंगे।

.....

.....

.....

.....

.....

12.9 सारांश

- महिला लेखन से संबंधित यह दूसरी इकाई है। इस इकाई के आरंभ में हमने विषय के चयन के विभिन्न आधारों पर विचार किया है। अन्य विषयों पर लिखे जाने वाले फीचर की तरह ही महिलाओं से संबंधित फीचर के लिए वही विषय चुनना चाहिए जो प्रासंगिक हो, जिसमें पाठक वर्ग रुचि ले सके, जिससे महिलाओं के संबंध में समाज में जागृति उत्पन्न करने में सहायता मिले और जिस विषय में स्वयं लेखक की रुचि हो और जिसके संबंध में उसने पर्याप्त अध्ययन किया हो।

- विषय के चयन के बाद फीचर के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन करना होता है। सबसे पहले विषय पर शोध और अध्ययन करना चाहिए, विषय से संबंधित आवश्यक तथ्य एकत्र कर लेने चाहिए। संबंधित लोगों से बातचीत करनी चाहिए और फोटो एवं दस्तावेज एकत्र कर लेने चाहिए। बिना पूर्ण तैयारी के फीचर लिखना उचित नहीं है।

- एकत्र सामग्री का पूरी तरह अध्ययन करके उनका संयोजन और संपादन – आवश्यक है। जो सामग्री आपने एकत्र की है, उसे व्यवस्थित कीजिए जो अनावश्यक लगे उसे अलग कर लीजिए और उपयोगी सामग्री के आधार पर फीचर की एक रूपरेखा बना लीजिए कि आपको किस तरह से फीचर लिखना है।

- फीचर के लेखन का आरंभ उपर्युक्त रूपरेखा के आधार पर कीजिए। आरंभ में आपको किसी न किसी रूप में विषय की जानकारी अवश्य देनी चाहिए। यह सीधे परिचयात्मक ढंग से या किसी कथन या घटना का उल्लेख करके भी दी जा सकती है। फीचर के मध्य भाग में फीचर की मुख्य अंतर्वस्तु को व्यवस्थित और रोचक ढंग से पेश कीजिए। अंतिम भाग भी प्रभावशाली होना चाहिए अर्थात वह पाठकों से किसी न किसी रूप में संवाद करता हुआ होना चाहिए। उन्हें कुछ कहे, कुछ सुझाए ताकि फीचर को एक सार्थक दिशा प्राप्त हो सके। यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि फीचर महिलाओं की किसी महत्वपूर्ण समस्या या पक्ष को सहानुभूतिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करे।

- फीचर को प्रभावशाली शीर्षक देने के लिए विषय के केन्द्रीय भाव को आधार बनाया जा सकता है। शीर्षक गद्यात्मक न होकर थोड़ा–सा साहित्यिक स्पर्श वाला हो सकता है जो पाठक को जल्दी आकृष्ट करे। लेकिन शीर्षक किसी भी स्थिति में महिलाओं के लिए अपमानजनक न हो।

- फीचर की भाषा–शैली का कोई बना–बनाया रूप नहीं हो सकता। विषय के अनुसार ही फीचर की भाषा और शैली तय होती है, फिर भी फीचर की भाषा सरल, सहज, रुचिकर और बोधगम्य हो । शैली वर्णनात्मक न हो, न फीचर समाचार की तरह लिखे जाने चाहिए।

अभ्यास

1) राजस्थान की भील आदिवासी जाति की महिलाओं से संबंधित फीचर लिखने के लिए कोई उपर्युक्त विषय सुझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) आपके सुझाये विषय पर फीचर तैयार करने के लिए क्या आप आदिवासी महिलाओं से साक्षात्कार लेना चाहेंगे? अगर हां, तो उनसे पूछे जाने वाले 4–5 प्रश्न तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) कामकाजी महिलाओं की समस्याओं पर एक फीचर लगभग 200 शब्दों में तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4) उपर्युक्त फीचर का एक उपयुक्त शीर्षक भी सुझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

12.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) इस विषय में रुचि हो।

ii) भील आदिवासी जाति और उनकी महिलाओं के संबंध में सामान्य जानकारी हो ।

iii) भील जाति और उनकी महिलाओं के संबंध में अध्ययन–शोध कर सकने की क्षमता हो।

2) हाँ, क्योंकि

i) भील जाति के संबंध में लोगों को कम जानकारी है। उनके लिए यह जानकारी से भरा विषय होगा।

ii) इससे आदिवासियों की समस्याओं के प्रति लोगों को जागरूक बनाया जा सकेगा।

3) इस फीचर में सभी वर्गों और समुदायों के पाठक रुचि ले सकते हैं। विशेष रूप से वे जो भारत की कम परिचित जातियों और समुदायों के बारे में जानना चाहते हैं। इस तरह के फीचर से लोगों को भारत की विविधता की जानकारी मिलती है औरवे समाज के वास्तविक स्वरूप से परिचित होते हैं।

4) फीचर के लिए निम्नलिखित तैयारी आवश्यक है–

i) भील जाति के संबंध में अब तक उपलब्ध सामग्री का अध्ययन।

ii) आगे की तैयारी के लिए रूपरेखा बनाना।

iii) भील जाति के लोगों के बीच जाना और उनके जीवन का नजदीकी से अध्ययन करना।

iv) इस समुदाय की महिलाओं और अन्य लोगों से विभिन्न पक्षों पर बातचीत करना।

v) उनसे संबंधित विभिन्न छायाचित्र या अन्य महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त करना, जो फीचर में इस्तेमाल की जा सकती हों ।

बोध प्रश्न 2

1) i) कामकाजी महिलाओं के संबंध में उपलब्ध सामाग्री का अध्ययन और विषयानुसार विभिन्न मुद्दों का निर्धारण।

ii) विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत कामकाजी महिलाओं से मुलाकात और बातचीत।

iii) कामकाजी महिलाओं की समस्याओं पर अन्य संबद्ध लोगों से बातचीत करना।

iv) फोटो आदि सामग्री एकत्र करना ।

2) आरंभ में कामकाजी महिलाओं से संबंधित जिस समस्या को उठाया गया है उसे प्रस्तुत करना होगा। यह कार्य सीधे–सीधे या किसी घटना या कथन द्वारा भी किया जा सकता है।

3) विषय निर्धारित कर स्वयं बनाइए।

अभ्यास के लिए दिए गए प्रश्नों के उत्तर

1) सामान्य परिचायात्मक फीचर भी तैयार किया जा सकता है और सामाजिक सांस्कृतिक, शैक्षिक आदि पक्षों पर भी फीचर हो सकता है।

2) विषयानुसार स्वयं तैयार कीजिए।

3) और 4) के उत्तर स्वयं लिखिए।